चने के पौधों पर जमी ओस की बूंदे कई रोगों से दिलवा सकती हैं छुटकारा

* छत्तीसगढ़ का अनूठा पारंपरिक ज्ञान

* विदेशी अनुसंधानकर्ताओं ने दिखायी रुचि

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सकचने के पौधों पर जमी ओस की बूंदों का प्रयोग औषधि के रुप विभिन्न रोगों की चिकित्सा मे बाहरी और आंतरिक तौर पर करते है। देश - विदेश के अनुसंधानकर्ता इस 'जादुई ओस' मे विशेष रुचि लेकर इसे व्यवसायिक उत्पाद के रुप मे विकसित करने इच्छुक है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि चने के पौधे से निकलने वाले अम्ल और ओस की बूदों का मिश्रण पारंपरिक रुप से उन क्षेत्रों के पारंपरिक चिकित्सक एकत्र करते है जहाँ चने की जैविक खेती होती है। एक रात पूर्व पतली सफेद चादर चने के खेतों खेतों डाल दी जाती है। सुबह ओस और अम्ल से भीगी चादर को निचोड़कर औषधि मिश्रण एकत्र कर लिया जाता है। यह मिश्रण पेट संबंधी रोगों की चिकित्सा मे विशेष उपयोगी है। यद्यपि चने की खेती केवल शीत ऋतु मे होती है पर इस औषधि मिश्रण को पारंपरिक विधियों की सहायता से पारंपरिक चिकित्सक वर्ष भर सुरक्षित रखते हैं और दैनिक सेवाओं मे प्रयोग करते है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक इस मिश्रण को शरीर की प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने मे सहायक मानते है। वर्तमान परिपेक्ष्य मे एड्स जैसे घातक रोगों जिसमे मनुष्य की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है , की चिकित्सा मे यह औषधि मिश्रण अहम भूमिका निभा सकता है। गंडई - सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक गर्मियों मे लू की चपेट मे आये रोगियों की चिकित्सा के लिये इस औषधि मिश्रण का प्रयोग करते है। सर्पदंश से प्रभावित व्यक्तियों मे कई बार विष उतर जाने के बाद भी लंबे समय तक सिर घूमना जैसी शिकायते रहती है। ऐसे व्यक्तियों को यह औषधि मिश्रण राहत पहुँचाता है और शरीर को विष से पूरी तरह मुक्त कर देता है। चने के पौधों पर जमी ओस की बूंदों को नेत्र रोगों के लिये भी उपयोगी माना जाता है विश्व के बहुत से देशों विशेषकर इटली और न्यूजीलैंड के शोधकर्ताओं ने इस पारंपरिक ज्ञान मे रुचि दिखायी है। पारंपरिक चिकित्सकों का मानना है कि चने की अलग-अलग किस्मे से भिन्न - भिन्न गुणवत्ता का औषधि मिश्रण प्राप्त होता है। चने के पौधों की उम्र का भी इस मिश्रण पर प्रभाव पड़ता है। सूर्योदय से पहले औषधि मिश्रण को एकत्र करने की सलाह पारंपरिक चिकित्सक देते है क्योंकि सूर्य का प्रकाश और ऊष्मा मिश्रण की गुणवत्ता को कम कर देती है। ये शोधकर्ता निजी संस्थानों की सहायता से छत्तीसगढ़ में पारंपरिक चिकित्सकों के सहयोग से इस औषधि मिश्रण का व्यवसायीकरण करना चाहते है। पंकज अवधिया का मानना है कि इस दिशा मे भारतीय प्रयास भी आवश्यक है ताकि पारंपरिक चिकित्सकों के हितों की सही मायनों मे रक्षा हो सके। इस औषधि मिश्रण को व्यवसायिक उत्पाद के रुप में विश्व बाजार मे स्थापित करने के लिये लंबे प्रयोगों की आवश्यकता है। अत: इस दिशा मे अविलंब प्रयास आवश्यक है।